International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 83-85

गांधी जी के दर्शन में धर्म

डॉ. अमित मेहता*

प्रस्तावना

महात्मा गांधी जी का धर्मिक अत्यन्त व्याप्क और उदार है। गांधी जी धर्म को किसी जाति विशेष का धर्म नहीं मानते थे। गांधी जी के धर्म में ऊँच–नीच, जाति–भेद, रंग–भेद के लिए कोई स्थान नहीं था। गांधी जी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्त्व स्वीकार किया और कहा कि धर्म को निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोंनो निष्प्राण और भून्य हो जाते है। गांधी जी ने धर्म के क्षैत्र में संसार के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा।(1) वह हिन्दु धर्म तथा हिन्दु संस्कृति के एक श्रेष्ठ उद्बोधक, दूसरे धर्मो के प्रति अत्यधिक सहिष्णु तथा उदार, देशप्रेमी, राष्ट्रभक्त तथा भावी भारत के द्रष्टा थे। ।

मास्को इंस्टिट्यूट ऑफ ओरियन्टल स्टडीज की अध्यक्षा डॉ. जीनिया वनीन के अनुसार गांधी जी के जीवन में भारत के भक्ति आन्दोलन के संतों का बहुत योगदान था उनमें आध्यात्मिकता का भाव जगाने में नरसी मेहता और दादूदयाल का बड़ा योगदान था ।(2) गांधी जी देश विदेश के अनेक समकालिन विद्वानों जान रस्किन, टॉलस्टाय तथा स्वामी विवेकानन्द के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। उनके मूल प्रेरक ग्रन्थ वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत तथा गीता थे। उनका हिन्दुवाद गीता व उपनिषद की शिक्षाओं पर आधारित था। गीता उनकी हमेशा प्रेरक मार्गदर्शिका रही है। उन्होने पहली बार 1888–1889 में गीता ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होने गीता पर टीका लिखी थी। वे गीता को माता समान मानते थे।(3) वे गीता के कर्म अटल सिद्धांत में पूर्ण विश्वास रखने वाले भक्त थे।(4) उनकी हमेशा इच्छा थी कि वे गीता को कंठस्थ कर ले।(5) वे अपना दैनिक आध्यात्मिक आहार गीता को कहते थे।(6) वे गीता को अपने लिए मार्गदर्शिका, कामघेनु, सहायिका तथा समस्याओं का समाधान करने वाली मानते थे।(7)

वे अपने आप को 'सनातनी हिन्दु' कहते थे तथा अपने आप को हिन्दु' कहलाने का गौरव अनुभव करते थे। गांधी जी ने हिन्दु धर्म को जीवन्त धर्म माना है।(8) गांधी जी हिन्दु धर्म को सभी धर्मों की जननी मानते थे। अनेक विद्वान भी इस तथ्य को स्वीकार करते थे। उदारणतः– महान दार्शनिक ड़ॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, विश्व प्रसिद्व इतिहासकार जदुनाथ सरकार, फ्रांस के विद्वान रोमां रोला, प्रसिद्व यूरोपियन विद्वान आर. सी. जैंकनिक, विश्व प्रसिद्व लेखिका कैरी ब्राउन आदि।

गांधी जी का चिन्तन सर्वस्पर्शी तथा बहुआयामी था। उन्होने मानव जीवन के विभिन्न पहलुओ के साथ –साथ धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक संबंधों का गम्भीर अध्ययन तथा विवेचना की है। वे हिन्दु धर्म की विश्वव्यापी श्रेष्ठता को मानते थे। गांधी जी व्यक्तिगत रूप से हिन्दु धर्म के महान पोषक, प्रेरक तथा सन्देशवाहक थे। भारतीय हिन्दु चिन्तन में 'सर्वजन हिताय' या 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की मान्यता है इसलिए गांधी जी का चिन्तन 'बहुजन हिताय' तक सीमित नहीं था । गांधी जी का धर्म सर्वोदय धर्म तथा दरिद्रनारायण की सेवा का धर्म था। उन्होनें पीड़ितों, असहायों और अभावग्रस्त लोगों की सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया। गांधी जी ने धर्म का सामाजीकरण व मानवीकरण किया। उन्होनें कहा कि सम्बन्धी व अजनबी, स्वदेशी या विदेशी, काले या गोरे, हिन्दु तथा सभी भारतीय मेरे भाई है और कोई भी एक दुसरे के लिए अजनबी नहीं है, सबके कल्याण का एक उद्देश्य 'सर्वोदय' होना चाहिए।(9)

* सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

गांधी जी के अनुसार धर्म का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी पाशविक प्रकृति पर विजय पर ले और स्वयं को ईश्वर व अपने अन्य साथी मनुष्यों से सम्बद्ध कर ले। गांधी जी के लिए धर्म और नैतिकता समानार्थी भाब्द है तथा सत्य और अहिंसा नैतिकता के आधारभूत सिद्धांत थे। उन्होने दोनों सिद्धांत को 11 सिद्धांतों में विकसित किया। ये 11 सिद्धांत– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, भारीर–श्रम, सर्व–धर्म समभाव, स्वदेशी, अस्वाद, सर्व–भयवर्जन, स्पर्श–भावना है। इनमें पहले पाँच हिन्दुवाद व जैन धर्म के आधारभूत नैतिक सिद्धांत है तथा अन्य 6 सिद्धांत उपरोक्त से निकले हुए समय की आवश्यकता के अनुसार ढाले जा सकते है।(10)

महात्मा गांधी जी के अनुसार सच्चा धर्म मंदिर जाना, प्रार्थना करना, दान करना, धार्मिक पुस्तकें पढना, कीर्तन करना तथा धर्म व्याख्यानों को सुनना नहीं हैं। ये सब धर्म के बाहरी रूप है जिसका पालन अन्यायी और अधर्मी पुरूष भी कर सकता है। सच्चा धर्म वह है जो जीवन को सक्रीय बना दे और मानव जीवन में सुख का संचार करें। उनके अनुसार सच्चा धर्म रूप नैतिक सिद्धांतों का जीवन में पालन करना है। गांधी जी धर्म–परिवर्तन के विरोधी थे। उनका मानना था कि व्यक्ति के लिए धर्म–परिवर्तन आवश्यक नहीं है, बल्कि यह उचित है कि वह अपने स्वयं के धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य करे। गांधी जी ने विश्व को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। उनका विश्वास था कि सत्य ही ईश्वर और ईश्वर ही सत्य है। उन्होने सत्य की अथक खोज का ही दुसरा नाम हिन्दु धर्म बताया है।गांधी जी ने कहा कि अहिंसा सभी धर्मो में है, परन्तु हिन्दु धर्म में इसकी उच्च अभिव्यक्ति और प्रयोग हुआ है।(11) उन्होनें यंग इण्डिया में लिखा है ''जिन प्राणियों ने हिंसा के मध्य अहिंसा के सिद्धांत को खोज निकाला, वे स्वयं हथियारों का प्रयोग जानते थे फिर भी उन्होने इसके व्यर्थ होने का अनुभव किया और युद्ध से दुखी संसार को बतलाया कि युद्ध की मुक्ति हिंसा से नही अपितु अहिंसा द्वारा है।'' साथ ही बताया ''मैं जैन व बौद्ध धर्म को हिन्दु धर्म से अलग नहीं मानता।''(12) गांधी जी ने आत्मा के सिद्धांत को स्वीकार किया और माना कि जन्म–मरण ईश्वर की इच्छा से होता है जिसे मनुष्य अपनी भाक्ति से परिवर्तित कर नहीं सकता। जब मृत्यु निश्चित है और निश्चित समय पर होनी है, तो मृत्यु से भय नही करना चाहिए।(13)

वे हिन्दु धर्म, पुर्नजन्म तथा कर्म के सिद्धांत पर अटूट आस्था रखते थे। गांधी जी ने हिन्दु धर्म में आस्था रखते हुए इसके आचरण सम्बन्धी रूढ़ियों, पाखण्ड़ों या भ्रान्तियों का पक्ष नहीं लिया। गांधी जी मूर्ति पूजा, वृक्ष पूजा आदि के सर्मथक भी थे और विरोधी भी। वे मूर्तियों को देवता नहीं मानते थे किन्तु ईश्वर के प्रतीक या माध्यम के रूप मूर्ति पूजा के विरोधी नहीं थे। उन्हे गो–पूजा में जीवमात्र के प्रति दया या अहिसा का भाव महसूस होता था।(14) उन्होने गो–रक्षा का अर्थ ईश्वर की समस्त मूक सृष्टि की रक्षा बताया है।वे गो–रक्षा को हिन्दु धर्म का केन्द्रीय बिन्दु मानते थे। उनका कथन है ''जो हिन्दु गो–रक्षा के लिए जितना तत्पर है, वह उतना ही श्रेष्ठ हिन्दु है।'' वे गाय को 'अवमाननीय सृष्टि का पवित्रमय रूप', 'कामधेनु' तथा 'करूणा का काव्य' मानते थे। गांधी जी के अनुसार ''गाय दूध ही नहीं देती बल्कि सारी खेती का आधार स्तम्भ भी होती है। यह करोडों हिन्दुस्तानियों का पालन करने वाली माता है।''(15) गांधी जी ने यह भी कहा कि हिन्दुओं की रक्षा तिलक लगाने, स्वर भुद्ध मन्त्र पढ़ने, तीर्थ यात्रा करने या जात–बिरादरी के नियमों को कट्टरता से पालन करने से नही होगी, बल्कि गाय को बचाने का साधना से ही होगी।(16) गांधी जी ने यह भी लिखा – ''मेरी आकांक्षा है कि गो–रक्षा के सिद्धांत की मान्यना सम्पूर्ण विश्व में हो पर इसके लिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले भारत में गो वंश का दुर्गति समाप्त हो और उसे उचित स्थान मिले।''(17) उनके प्रसिद्ध शिष्य आचार्य विनोबा भावे का कथन था–'गोहत्या मातृ हत्या ही है।'

गांधी जी ने बताया कि जिस प्रकार पश्चिम के देशों ने भौतिकवाद के क्षेत्र में खोजे की है, उसी प्रकार हिन्दु धर्म ने धर्म–अध्यात्म और आत्मा के क्षेत्र में खोजे की है। परन्तु हम उन महान खोंजो को देख नहीं रहे और पश्चिम की भौतिकवाद की प्रगति से चकाचौंध हो गए है। वास्तव में ऐसा लगता है कि भारत भौतिकवाद के ज्वार को रोकने का दायित्व निभा सकें इसके लिए भारत को ईश्वर ने इस दिशा में प्रगति करने से रोक दिया है।

गांधी जी सभी धर्मो के प्रति उदार और सहिष्णु थे। हिन्दु होते हुए भी गांधी जी मुसलमानों के प्रति उदार, सहनशील और सहिष्णु थे। उन्हे लगता था कि हिन्दु–मुस्लिम एकता व सहयोग भारत की स्वतन्त्रता के लिए आवश्यक है। उन्होने भारत के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में मुसलमानों का सहयोग प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास किये।(18) उन्होने हिन्दु–मुस्लिम एकता के लिए 1919 ई. में खिलाफत आन्दोलन के अवसर को 'कामधेनु' कहा।

उन्होने कहा कि हिन्दु–मुसलमान में जितनी एकता इस समय है, उतनी एकता इस युग में कभी नहीं थी।[19] परन्तु यह हिन्दु–मुस्लिम एकता पूर्णतः अस्थाई व अवसरवादी सिद्ध हुई। खिलाफत आन्दोलन के दूरगामी दुष्परिणाम हुए।[20] 1919–1947 ई. तक गांधी जी हिन्दु–मुस्लिम एकता के लिए अथक प्रयास करते रहे। परन्तु उनके इस दिशा में प्रयत्नों को भारतीय विद्वानों, जनमानस, प्रतिक्रियावादी तथा अलगाववादी मुसलमानों ने नहीं अपनाया। भारतीय दार्शनिकों ने प्रयासों की कटु आलोचना की।[21]

गांधी जी ईसाई धर्म के प्रति अत्यधिक उदार और सहिष्णु थे। गांधी जी ने ईसाईयों के इस कथन को अस्वीकार किया कि ईसाई धर्म ही एक मात्र सच्चा धर्म है या हिन्दु–धर्म झुठा है।[22] उन्होने ईसाईयों द्वारा लोगो के धर्मान्तरण कराने के ढंग का विरोध किया।[23] और कहा ईसाईयों द्वारा किये गये मानवतावादी कार्य उत्तम है, परन्तु उनका मूल्य नहीं रहेगा यदि वे अपना उद्देश्य दूसरो को ईसाई बनाने में रखेगें। गांधी जी जैन व बौद्ध को हिन्दु–धर्म से अलग नहीं मानते थे। वे सिक्ख पंथ को हिन्दु–धर्म का अभिन्न अंग मानते थे। उन्होने हिन्दु व सिक्खों को भाई–भाई कहा। इसी तरह उन्होने पारसियों की जिन्होने भारत की राष्ट्र जीवन धारा से जुड़ कर महत्त्वपूर्ण कार्य किये। गांधी जी के अनुसार धर्म का उद्देश्य 'आत्मानुभूतक', ईश्वर से साक्षात्कार व मोक्ष प्राप्त करना है और यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। उन्होने अपने धर्म में सभी धर्मो के अच्छे–अच्छे मौलिक सिन्द्धान्तों का समन्वय किया। गांधी जी ने हिन्दु–धर्म, हिन्दु–संस्कृति के अनुकुल अन्य धर्मावलम्बियों को साथ ले कर चलने का प्रयास किया। गांधी जी ने धर्म की सृजनात्मक भाक्ति को स्वीकार किया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भाम्भुलाल त्रिपाठी, गांधी–धर्म और समाज, पृ.स. 22
2. प्रो. गीता श्रीवास्तव, प्रोग्राम एण्ड़ एक्टिविटिजः सम रिफलैक्शनस (2001–2005), डॉ. जीनिया वनीन का व्याख्यान, पृ.स. 7
3. जे. बी. कृपलानी, गांधी – हिज लाइफ एण्ड थॉट पृ. 337
4. सम्पूर्ण वाड्.मय, खण्ड 44, पृ. 204–205, 21फरवरी 1936
5. सम्पूर्ण वाड्.मय, खण्ड 44, पृ. 100–101, 2 फरवरी 1934
6. सम्पूर्ण वाड्.मय, खण्ड 44, पृ. 116, 27 अगस्त 1925
7. सम्पूर्ण वाड्.मय, खण्ड 44, पृ. 187–191, 30 जनवरी 1937
8. नवजीवन, 7 फरवरी 1926
9. कृष्णा कृपलानी(सम्पादित), ऑल मैन आर ब्रदर्स, अहमदाबाद (1960)
10. जे. बी. कृपलानी, गांधी – हिज लाइफ एण्ड थॉट पृ. 337
11. सम्पूर्ण गांधी वाड्.मय, 2005, 23, पृ. 516–518; यंग इण्डिया, 24 अप्रैल 1924
12. यंग इण्डिया, 20 अक्टुम्बर 1927
13. भाम्भुलाल त्रिपाठी, गांधी–धर्म और समाज, पृ.स. 98
14. भाम्भुलाल त्रिपाठी, गांधी–धर्म और समाज, पृ.स. 22
15. यंग इण्डिया, 6 नवम्बर 1921
16. यंग इण्डिया, 1 जनवरी 1925
17. यंग इण्डिया, 21 जनवरी 1925
18. मोहम्मद भाकीर, खिलाफत टू पार्टीशन, पृ. 69
19. सम्पूर्ण गांधी वाड्.मय, खण्ड 17, पृ.64
20. सतीश चन्द्र मितल, राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वीधानता संर्घष (1858–1947), पृ. 278
21. दीना नाथ वर्मा, आधुनिक भारत (पटना 1947) पृ. 440
22. सम्पूर्ण गांधी वाड्.मय, खण्ड 35, पृ. 544–545, 29 नवम्बर 1927
23. वही, खण्ड 64, पृ. 364, जनवरी 1927

❖◆❖